IGNOU IQ HINDI

SOLVED ASSIGNMENT

2025-26

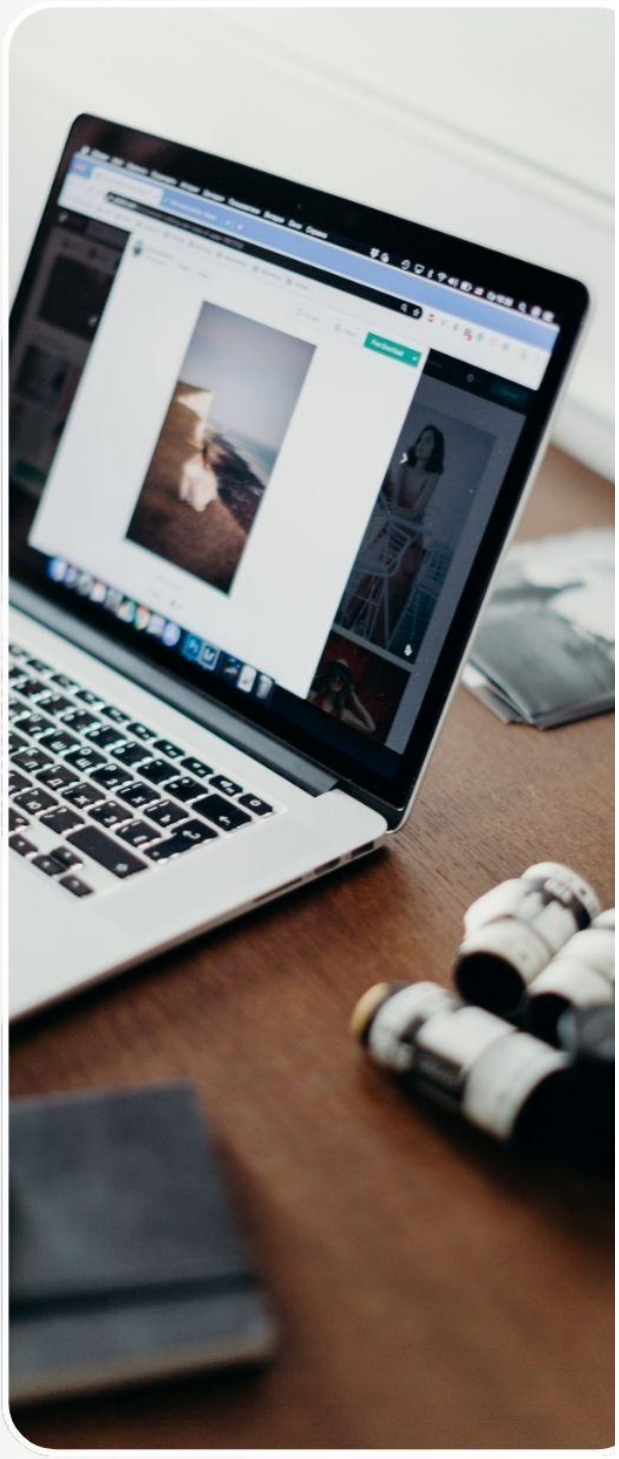

Your journey to success begins here join our comprehensive online course.

CONTACT US

6205717642/8521027286

ignouiqinfo@gmail.com

This PDF of 'IGNOU IQ Hindi' is not for selling or sharing, otherwise legal action can be taken against you.

ASSIGNMENT

BPAG - 171

Disclaimer for this Guess Paper/Notes/Sample Papers By IGNOU IQ HINDI (IIH)

This PDF contains previous year questions asked by IGNOU. This PDF has been created to help you in the exam. However, It is important to note the following :

A. No Guarantee of Examination Questions: We do not guarantee that the questions presented in this sample paper will appear in your actual exams. The content is for practice purposes only.

B. Book Study Recommended: To achieve good marks in your IGNOU exams, it is highly recommended that you thoroughly study the prescribed course materials and textbooks. Relying solely on this sample paper may not be sufficient for exam success.

C. Use as a Study Materials : Use this sample paper as a supplementary study aid to test your knowledge and exam preparedness.

D. Self-Responsibility: Your performance in exams is your responsibility, and success depends on your dedication to studying the course material.

PDF By Suraj Kumar Sir (8521027286/6205717642) .....visit our website www.ignouiqhindi.com

हमारे यहाँ Handwritten Assignments/Synopsis/Project बनाया जाता है - 62057107642/8521027286

बी.पी.ए.जी-171: आपदा प्रबंधन

अध्यापक जांच सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड: बी.पी.ए.जी-171

सत्रीय कार्य कोड: ए.एस.टी./टी.एम.ए./ जुलाई-2025 और जनवरी-2026

पूर्णांक : 100

बी.पी.ए.जी–171 : आपदा प्रबंधन

अध्यापक जांच सत्रीय कार्य

पाठ्यकम कोड : बी.पी.ए.जी-171
सत्रीय कार्य कोड : ए.एस.टी./टी.एम.ए./ जुलाई–2025 और जनवरी–2026
पूर्णांक : 100

प्रिय छात्र/छात्राओं

इस सत्रीय कार्य में तीन भाग हैं। आपको तीनों भागों के सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

सत्रीय कार्य–क

निम्न प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए।

1. आपदा को परिभाषित कीजिए और इसके प्रकारों की चर्चा कीजिए। 20
2. भारत सरकार की आपदा प्रबन्धन नीति की चर्चा कीजिए। 20

सत्रीय कार्य–ख

निम्न प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का है।

3. मानव निर्मित आपदा पर एक लेख लिखिए। 10
4. संवेदनशीलता से आपका क्या आशय है? इसकी पहचान के निर्धारकों का उल्लेख करें। 10
5. भारत में होने वाली विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं के प्रकारों की चर्चा कीजिए। 10

सत्रीय कार्य–ग

निम्न प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 8 अंक का है।

6. खतरा को परिभाषित कीजिए। 6
7. जलीय आपदाओं से आपका क्या आशय है? 6
8. आपदा न्यूनीकरण उपायों का उल्लेख कीजिए। 6
9. क्षति आकलन के विभिन्न आयामों का उल्लेख कीजिए। 6
10. पुनर्वास को परिभाषित कीजिए और उसके प्रकारों को खोजिए। 6

सत्रीय कार्य-क

निम्न प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए।

1. आपदा को परिभाषित कीजिए और इसके प्रकारों की चर्चा कीजिए।

उत्तर : **आपदा की परिभाषा**

आपदा (Disaster) वह स्थिति है, जब प्राकृतिक या मानव-निर्मित कारणों से अचानक इतनी बड़ी हानि होती है कि सामान्य जीवन, संपत्ति, संसाधन, और पर्यावरण पर गंभीर प्रभाव पड़ता है तथा स्थानीय संसाधनों से निपटना संभव नहीं होता।

प्राकृतिक आपदा का विस्तृत वर्णन

प्राकृतिक आपदाएँ वे आपदाएँ हैं, जो प्रकृति की शक्तियों के कारण उत्पन्न होती हैं। इनमें मानवीय हस्तक्षेप नहीं होता। प्रमुख प्राकृतिक आपदाएँ निम्नलिखित हैं:

- **भूकंप:** पृथ्वी की सतह में अचानक कंपन, जिससे इमारतें गिर सकती हैं, जान-माल की हानि हो सकती है।
- **बाढ़:** अत्यधिक वर्षा या नदी के किनारे बाँध टूटने से जलभराव, जिससे फसल, घर, सड़कें आदि डूब जाते हैं।
- **चक्रवात:** समुद्र में बनने वाले तीव्र वायुदाब के कारण तेज़ हवाएँ और भारी वर्षा, जिससे तटीय क्षेत्रों में भारी नुकसान होता है।
- **सूखा:** लंबे समय तक वर्षा न होने से जल की कमी, फसलें सूखना, पशुधन की हानि।
- **ज्वालामुखी विस्फोट:** पृथ्वी के अंदर से लावा, राख, और गैस का बाहर आना, जिससे आसपास के क्षेत्र में तबाही मच जाती है।

मानव-निर्मित आपदा का विस्तृत वर्णन

मानव-निर्मित आपदाएँ वे आपदाएँ हैं, जो मनुष्य की गतिविधियों के कारण उत्पन्न होती हैं। इनमें प्रमुख हैं:

- **औद्योगिक दुर्घटनाएँ:** जैसे गैस रिसाव (भोपाल गैस त्रासदी), रासायनिक विस्फोट, फैक्ट्री में आग लगना।
- **परमाणु दुर्घटनाएँ:** जैसे चर्नोबिल या फुकुशिमा परमाणु संयंत्र दुर्घटना।
- **युद्ध और आतंकवाद:** बम विस्फोट, गोलीबारी, दंगे आदि।
- **परिवहन दुर्घटनाएँ:** रेल, सड़क, वायु या जल परिवहन में बड़ी दुर्घटनाएँ।
- **वन्याग्नि (Forest Fire):** जंगलों में आग लगना, जो अक्सर मानवीय लापरवाही से होती है।

इन दोनों प्रकार की आपदाओं से बचाव के लिए जागरूकता, पूर्व-तैयारी, और त्वरित राहत कार्य आवश्यक हैं।

टिप्पणी: आपदा का प्रभाव तात्कालिक और स्थानीय हो सकता है, लेकिन अक्सर यह व्यापक होता है और लंबे समय तक बना रह सकता है। यह प्रभाव किसी समुदाय या समाज की अपने संसाधनों से निपटने की

क्षमता की परीक्षा ले सकता है या उससे अधिक हो सकता है, और इसलिए बाहरी स्रोतों से सहायता की आवश्यकता हो सकती है, जिसमें पड़ोसी क्षेत्राधिकार, या राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सहायता शामिल हो सकती है।

आपातकाल शब्द का प्रयोग कभी-कभी आपदा शब्द के साथ एक दूसरे के स्थान पर किया जाता है, उदाहरण के लिए, जैविक और तकनीकी खतरों या स्वास्थ्य आपात स्थितियों के संदर्भ में, जो हालांकि, उन खतरनाक घटनाओं से भी संबंधित हो सकते हैं जिनके परिणामस्वरूप किसी समुदाय या समाज के कामकाज में गंभीर व्यवधान नहीं होता है।

आपदा के दौरान और उसके तुरंत बाद होने वाली क्षति को आमतौर पर भौतिक इकाइयों (जैसे, आवास के वर्ग मीटर, सड़कों की किलोमीटर लंबाई आदि) में मापा जाता है, और यह प्रभावित क्षेत्र में भौतिक संपत्तियों के पूर्ण या आंशिक विनाश, बुनियादी सेवाओं के बाधित होने और आजीविका के स्रोतों को हुए नुकसान का वर्णन करता है।

- धीमी गति से उत्पन्न होने वाली आपदा वह होती है जो समय के साथ धीरे-धीरे घटती है। धीमी गति से उत्पन्न होने वाली आपदाओं का संबंध, उदाहरण के लिए, सूखा, मरुस्थलीकरण, समुद्र स्तर में वृद्धि, महामारी जैसी घटनाओं से हो सकता है।
- अचानक घटित होने वाली आपदा वह होती है जो किसी खतरनाक घटना के कारण उत्पन्न होती है और जो तेजी से या अप्रत्याशित रूप से घटित होती है। अचानक घटित होने वाली आपदाओं में भूकंप, ज्वालामुखी विस्फोट, बाढ़, रासायनिक विस्फोट, महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे की विफलता, परिवहन दुर्घटना आदि शामिल हो सकते हैं।

2. भारत सरकार की आपदा प्रबन्धन नीति की चर्चा कीजिए ।

उत्तर : राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण भारत में आपदा प्रबंधन के लिये शीर्ष वैधानिक निकाय है।

- इसका ओपचारिक रूप से गठन 27 सितम्बर, 2006 को **आपदा प्रबंधन अधिनियम, 2005** के तहत हुआ जिसमें प्रधानमंत्री अध्यक्ष और नौ अन्य सदस्य होंगे और इनमें से एक सदस्य को उपाध्यक्ष पद दिया जाएगा।
- **अधिदेश:** इसका प्राथमिक उद्देश्य प्राकृतिक या मानव निर्मित आपदाओं के दौरान प्रतिक्रियाओं में समन्वय कायम करना और आपदा-प्रत्यास्थ (आपदाओं में लचीली रणनीति) व संकटकालीन प्रतिक्रिया हेतु क्षमता निर्माण करना है। आपदाओं के प्रति समय पर और प्रभावी प्रतिक्रिया के लिये आपदा प्रबंधन हेतु नीतियाँ, योजनाएँ और दिशा-निर्देश तैयार करने हेतु यह एक शीर्ष निकाय है।
- **विजन:** एक समग्र, अग्रसक्रिय तकनीक संचालित और संवहनीय विकास रणनीति के द्वारा एक सुरक्षित और आपदा-प्रत्यास्थ भारत बनाना, जिसमें सभी हितधारकों की मौजूदगी हो तथा जो रोकथाम, तैयारी और शमन की संस्कृति का पालन करती हो।

राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण का विकास

- आपदा प्रबंधन प्राधिकरण को राष्ट्रीय प्राथमिकता का महत्त्व देते हुए भारत सरकार ने अगस्त 1999 में एक उच्चाधिकार प्राप्त कमेटी और वर्ष 2001 के गुजरात भूकंप के बाद एक राष्ट्रीय कमेटी का गठन आपदा प्रबंधन योजनाओं पर तैयारी की सिफ़ारिश करने और प्रभावी शमन सुझाने हेतु किया।

- दसवीं पंचवर्षीय योजना के अभिलेख में भी प्रथम बार आपदा प्रबंधन पर एक विस्तृत अध्याय है। बारहवें वित्त आयोग को भी आपदा प्रबंधन हेतु वित्तीय प्रबंध की समीक्षा हेतु अधिदेश दिया गया था।
- 23 दिसंबर, 2005 को भारत सरकार ने आपदा प्रबंधन अधिनियम बनाया जिसमें प्रधानमंत्री के नेतृत्व में एक राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (NDMA), और संबद्ध मुख्यमंत्रियों के नेतृत्व में राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरणों (SDMAs) की स्थापना की परिकल्पना भारत में आपदा प्रबंधन का नेतृत्व करने और उसके प्रति एक समग्र व एकीकृत दृष्टिकोण कार्यान्वित करने हेतु की गई।

राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के कार्य तथा उत्तरदायित्व

- राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन योजना को स्वीकृति देना।
- आपदा प्रबंधन हेतु नीतियाँ तैयार करना।
- राष्ट्रीय योजना के अनुसार केंद्र सरकार के मंत्रालयों या विभागों द्वारा बनाई गई योजनाओं को स्वीकृत करना।
- ऐसे दिशा-निर्देश तैयार करना जिनका अनुसरण कर राज्य के प्राधिकारी राज्य योजना तैयार कर सकें।
- ऐसे दिशा-निर्देश तैयार करना जिनका अनुसरण केंद्रीय सरकार के मंत्रालयों या विभागों द्वारा आपदा रोकथाम के उपायों को एकीकृत करने या आपदा प्रभावों के शमन हेतु अपनी विकास योजनाओं ओर परियोजनाओं में किया जा सके।
- आपदा प्रबंधन नीति एवं योजना के प्रवर्तन और कार्यान्वियन में समन्वय करना।
- शमन के लिये निधियों के प्रावधान की सिफ़ारिशें करना।
- अन्य ऐसे देशों को जो कि बड़ी आपदाओं से प्रभावित होते हैं, ऐसी सहायता देना जो केंद्रीय सरकार द्वारा निर्धारित की गई है ।
- भयावह आपदा स्थितियों या आपदाओं से निपटने हेतु रोकथाम या शमन या तैयारी और क्षमता निर्माण के ऐसे अन्य उपाय अपनाना जिन्हें वह आवश्यक समझे।

सत्रीय कार्य-ख

निम्न प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का है।

3. मानव निर्मित आपदा पर एक लेख लिखिए ।

उत्तर : मानव निर्मित आपदाएँ (Man-Made Disasters) मानवीय लापरवाही, त्रुटि, तकनीकी विफलता या जानबूझकर की गई गतिविधियों (जैसे युद्ध, दंगे, प्रदूषण) के कारण उत्पन्न होती हैं। ये प्राकृतिक नहीं होतीं, बल्कि समाज, पर्यावरण और अर्थव्यवस्था को भारी नुकसान पहुँचाती हैं। प्रमुख उदाहरणों में भोपाल गैस त्रासदी, औद्योगिक आगजनी, परमाणु दुर्घटनाएँ, तेल रिसाव और आतंकी हमले शामिल हैं।

मानव निर्मित आपदा: अर्थ और कारण

मानव निर्मित आपदाओं का सीधा संबंध मानवीय क्रियाकलापों से है। इन्हें तकनीकी विफलता, लापरवाही या जानबूझकर की गई दुर्घटनाओं के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है।

- **लापरवाही:** सुरक्षा मानकों का पालन न करना, औद्योगिक दुर्घटनाएँ (जैसे रसायन का रिसाव)।
- **तकनीकी विफलता:** बिजली ग्रिड फेल होना, हवाई या रेल दुर्घटनाएँ।
- **सामाजिक-राजनीतिक कारण:** युद्ध, आतंकवादी हमला, दंगे।
- **पर्यावरणीय क्षरण:** अनियोजित शहरीकरण, वनों की कटाई, प्रदूषण।

प्रमुख मानव निर्मित आपदाएँ और उदाहरण

1. **औद्योगिक और तकनीकी आपदाएँ:** भोपाल गैस त्रासदी (1984) इसका सबसे प्रमुख उदाहरण है। इसके अलावा, चेरनोबिल परमाणु दुर्घटना और विभिन्न तेल रिसाव की घटनाएँ इसके अंतर्गत आती हैं।
2. **पर्यावरणीय और रासायनिक आपदाएँ:** जहरीली गैसों का रिसाव, खतरनाक रसायनों का फैलाव, और प्रदूषण जो स्वास्थ्य के लिए खतरा पैदा करते हैं।
3. **सामाजिक और युद्ध-जनित आपदाएँ:** बम विस्फोट, दंगे, भगदड़, और युद्ध जैसी स्थितियाँ जो सामूहिक हिंसा और विस्थापन का कारण बनती हैं।
4. **परिवहन आपदाएँ:** सड़क और रेल दुर्घटनाएँ, हवाई जहाज दुर्घटनाएँ, जो तकनीकी खराबी या मानवीय भूल के कारण होती हैं।

मानव निर्मित आपदाओं का प्रभाव

ये आपदाएँ व्यापक स्तर पर जान-माल की हानि का कारण बनती हैं:

- **स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ:** शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को गंभीर नुकसान।
- **आर्थिक विनाश:** बुनियादी ढाँचे, संपत्ति का नुकसान और अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव।
- **पर्यावरण पर प्रभाव:** पारिस्थितिक तंत्र (Ecosystem) का विनाश और दीर्घकालिक प्रदूषण।

आपदा प्रबंधन और बचाव

मानव निर्मित आपदाओं को उचित प्रबंधन और सतर्कता से कम किया जा सकता है:

- **सुरक्षा मानक:** उद्योगों में सख्त सुरक्षा नियमों का पालन करना।
- **चेतावनी प्रणाली:** खतरनाक क्षेत्रों में समय पर चेतावनी प्रणाली (Warning System) का उपयोग करना।
- **जागरूकता:** जनता को आपातकालीन निकासी (Evacuation) के तरीकों के बारे में शिक्षित करना।
- **निगरानी:** संवेदनशील क्षेत्रों में कड़ी निगरानी और कानून व्यवस्था को दुरुस्त रखना।

निष्कर्ष

मानव निर्मित आपदाएं सीधे तौर पर मानवीय गलतियों का परिणाम हैं, जो न केवल विकास को बाधित करती हैं बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी खतरा पैदा करती हैं। इन आपदाओं से बचने के लिए तकनीकी सुरक्षा के साथ-साथ नैतिक जिम्मेदारी भी आवश्यक है।

4. संवेदनशीलता से आपका क्या आशय है? इसकी पहचान के निर्धारिकों का उल्लेख करें।

उत्तर : संवेदनशीलता से तात्पर्य दूसरों की भावनाओं, अनुभूतियों, और बाहरी उत्तेजनाओं के प्रति जागरूक, सहानुभूतिपूर्ण और शीघ्र प्रतिक्रियाशील होने के गुण से है। यह न केवल भावनाओं को समझने, बल्कि शारीरिक या मानसिक उत्तेजनाओं को गहराई से महसूस करने की क्षमता है। यह एक सकारात्मक व्यक्तित्व विशेषता है जो सहयोग और गहरे संबंध बनाने में मदद करती है।

संवेदनशीलता की पहचान के प्रमुख निर्धारिक/कारक:

संवेदनशीलता विभिन्न कारकों से निर्धारित होती है, जो व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित करते हैं:

- **भावनाओं के प्रति जागरूकता (Emotional Awareness):** दूसरों के दर्द, ख़ुशी या व्यवहारिक परिवर्तनों को जल्दी महसूस करना और समझना।
- **सहानुभूति (Empathy):** किसी दूसरे व्यक्ति की स्थिति में खुद को रखकर देखना और उनकी भावनाओं को साझा करना।
- **व्यवहार और प्रतिक्रिया (Behavioral Response):** किसी भी घटना या भावनात्मक उत्तेजना पर अत्यधिक प्रतिक्रियाशील (sensitive) होना, कभी-कभी अति-संवेदनशीलता (High Sensitivity) प्रदर्शित करना।
- **परिस्थितिजन्य कारक (Situational Factors):** पारिवारिक स्थिति (जैसे- टूटे रिश्ते या दुर्व्यवहार), व्यक्तिगत विपदाएं, और आर्थिक संकट संवेदनशीलता (अति-संवेदनशीलता) को बढ़ाते हैं।
- **संवेदी प्रक्रिया (Sensory Processing):** शारीरिक या पर्यावरणीय उत्तेजनाओं (जैसे आवाज़, रोशनी) के प्रति तीव्र अनुभव, जिसे 'उच्च संवेदनशील व्यक्ति' (HSP) के रूप में भी जाना जाता है।
- **पालन-पोषण और वातावरण (Upbringing & Environment):** बचपन का माहौल, माता-पिता का व्यवहार, और सामाजिक अनुभव व्यक्ति के संवेदनशील व्यक्तित्व के विकास को प्रभावित करते हैं।

संवेदनशील लोग अक्सर अपने पर्यावरण के प्रति अधिक जागरूक होते हैं और सकारात्मक या नकारात्मक अनुभवों से अधिक गहराई से प्रभावित होते हैं।

5. भारत में होने वाली विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं के प्रकारों की चर्चा कीजिए।

उत्तर : भारत अपनी भौगोलिक और जलवायु परिस्थितियों के कारण दुनिया के सबसे अधिक आपदा-प्रवण देशों में से एक है, जहाँ बाढ़, चक्रवात, सूखा और भूस्खलन प्रमुख प्राकृतिक आपदाएं हैं। देश का लगभग 12% हिस्सा बाढ़, 5,700 किमी लंबी तटरेखा चक्रवात, और 68% क्षेत्र सूखे के प्रति संवेदनशील है। ये आपदाएं जन-जीवन, कृषि और बुनियादी ढांचे को भारी नुकसान पहुँचाती हैं।

भारत में होने वाली प्रमुख प्राकृतिक आपदाओं का वर्गीकरण इस प्रकार है:

1. जलीय आपदाएँ (Water-related Disasters)

- **बाढ़ (Flood):** गंगा, ब्रह्मपुत्र और उनकी सहायक नदियों के कारण असम, बिहार, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल में हर साल बाढ़ आती है, NIOS। हाल के वर्षों में शहरी बाढ़ की समस्या भी बढ़ी है।
- **सूखा (Drought):** राजस्थान, गुजरात, पश्चिमी मध्य प्रदेश, मराठवाड़ा और कर्नाटक जैसे क्षेत्रों में वर्षा की कमी के कारण सूखे की स्थिति पैदा होती है, NIOS।
- **सुनामी (Tsunami):** तटीय क्षेत्रों में भूकंप के कारण समुद्र के अंदर हलचल से यह आपदा आती है, Vedantu।

2. मौसमी आपदाएँ (Meteorological Disasters)

- **चक्रवात (Cyclones):** भारत के पूर्वी तट (ओडिशा, आंध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल) और पश्चिमी तट (गुजरात) में चक्रवात अक्सर तबाही मचाते हैं, NIOS।
- **ओलावृष्टि और शीतलहर:** उत्तर भारत में सर्दियों के दौरान फसलों को नुकसान पहुँचाती हैं, Wikipedia।
- **लू (Heat Wave):** गर्मियों में उत्तर और मध्य भारत में तापमान बढ़ने से यह स्वास्थ्य को गंभीर रूप से प्रभावित करती है।

3. भूगर्भीय आपदाएँ (Geological Disasters)

- **भूकंप (Earthquake):** हिमालयी क्षेत्र, कच्छ (गुजरात), और अंडमान-निकोबार द्वीप समूह उच्च भूकंपीय जोखिम वाले क्षेत्र हैं, NIOS।
- **भूस्खलन (Landslides):** हिमालयी क्षेत्रों (उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश) और पश्चिमी घाट में मूसलाधार बारिश के कारण पहाड़ी मिट्टी खिसकने की घटनाएँ होती हैं, Wikipedia hi.wikipedia.org

सत्रीय कार्य-ग

निम्न प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 8 अंक का है।

6. खतरा को परिभाषित कीजिए ।

उत्तर : खतरा (Hazard) किसी भी ऐसी वस्तु, पदार्थ, मानवीय गतिविधि या स्थिति को कहते हैं, जिसमें लोगों के स्वास्थ्य, जीवन, संपत्ति, आजीविका या पर्यावरण को नुकसान पहुँचाने की क्षमता होती है। यह एक संभावित जोखिम है जो अनुचित नियंत्रण के कारण शारीरिक/मानसिक चोट, बीमारी, या पर्यावरणीय क्षति का कारण बन सकता है।

खतरे के प्रमुख पहलू:

- **क्षमता:** खतरा नुकसान पहुँचाने की क्षमता (Potential) है, न कि स्वयं नुकसान।
- **उदाहरण:** बिजली के खुले तार (भौतिक), रसायन (रासायनिक), वायरस/बैक्टीरिया (जैविक), मशीनरी, या कार्यस्थल पर तनाव (मनोसामाजिक)।
- **संदर्भ:** Wikipedia के अनुसार, खतरा केवल तब होता है जब उसके संपर्क में आने का कोई मार्ग हो और मनुष्य मौजूद हों।

खतरे (Hazard) और जोखिम (Risk) में अंतर:

- **खतरा:** वह चीज़ जो नुकसान पहुँचा सकती है (जैसे- शार्क मछली)।
- **जोखिम:** उस खतरे से नुकसान होने की संभावना (जैसे- शार्क के पास तैरना)।

7. जलीय आपदाओं से आपका क्या आशय है?

उत्तर : जलीय आपदाओं (Hydrological Disasters) से आशय जल की मात्रा, प्रवाह या गुणवत्ता में अचानक और विनाशकारी परिवर्तनों से है, जो जनजीवन और पर्यावरण के लिए गंभीर खतरा पैदा करते हैं। ये आपदाएं मुख्य रूप से बाढ़, सूखा, सुनामी, और तूफानी लहरों के रूप में प्रकट होती हैं, जिनका प्रमुख कारण अत्यधिक वर्षा, जलवायु परिवर्तन, और मानवीय हस्तक्षेप (जैसे वनों की कटाई) है।

जलीय आपदाओं के प्रमुख प्रकार:

- **बाढ़ (Flood):** जब नदियाँ या जल निकाय उफान पर होते हैं, जिससे आसपास का क्षेत्र जलमग्न हो जाता है।
- **अचानक बाढ़ (Flash Floods):** बहुत ही कम समय में भारी बारिश के कारण आने वाली विनाशकारी बाढ़।
- **सुनामी (Tsunami):** समुद्र के भीतर भूकंप या ज्वालामुखी विस्फोट से उत्पन्न विशाल लहरें।
- **सूखा (Drought):** जल स्रोतों की कमी के कारण लंबे समय तक पानी की कमी होना।
- **तूफानी लहरें (Storm Surges):** चक्रवातों के दौरान समुद्र का स्तर अचानक ऊपर उठना।

जलीय आपदाओं का प्रभाव और कारण:

- **प्रभाव:** इन आपदाओं से जान-माल की भारी हानि, आजीविका का विनाश, बुनियादी ढांचे (पुल, सड़के, घर) का नष्ट होना और जलजनित बीमारियों का प्रसार होता है।

8. आपदा न्यूनीकरण उपायों का उल्लेख कीजिए ।

उत्तर : आपदा न्यूनीकरण (Disaster Mitigation) का अर्थ आपदाओं के प्रभावों को कम करने के लिए संरचनात्मक (मजबूत निर्माण) और गैर-संरचनात्मक (योजना, शिक्षा) उपाय अपनाना है। मुख्य उपायों में भूकंपरोधी भवन निर्माण, बाढ़ तटबंध, पूर्व चेतावनी प्रणालियाँ (Early Warning Systems), मैंग्रोव संरक्षण, तथा आपदा प्रबंधन का प्रशिक्षण शामिल है।

प्रमुख आपदा न्यूनीकरण उपाय

- **संरचनात्मक उपाय (Structural Measures):**
  - **भूकंपरोधी निर्माण:** भूकंप संभावित क्षेत्रों में घरों को सुरक्षित बनाने के लिए भवन संहिता (Building Codes) का कड़ाई से पालन।
  - **तटबंध और बांध:** बाढ़ की स्थिति में पानी के बहाव को नियंत्रित करने के लिए तटबंधों का निर्माण।

    - **अवसंरचना लचीलापन:** महत्वपूर्ण सुविधाओं (अस्पताल, स्कूल) को मजबूत बनाना ताकि वे आपदा के बाद भी काम कर सकें।
- **गैर-संरचनात्मक उपाय (Non-Structural Measures):**
    - **पूर्व चेतावनी प्रणाली (Early Warning System):** बाढ़, चक्रवात और भूकंप के बारे में जनता को समय पर सतर्क करना।
    - **भूमि-उपयोग नियोजन:** भूस्खलन-प्रवण (Landslide prone) और बाढ़ वाले क्षेत्रों में विकास और बस्तियों को रोकना।
    - **पारिस्थितिकी तंत्र का संरक्षण:** तटीय इलाकों में मैंग्रोव लगाना जो चक्रवात और तूफानी लहरों के खिलाफ प्राकृतिक रक्षक का काम करते हैं।
    - **जागरूकता और शिक्षा:** समुदाय को आपातकालीन प्रक्रियाओं और सुरक्षित आश्रय स्थलों के बारे में प्रशिक्षित करना।
- **वित्तीय और नीतिगत उपाय:** जोखिम हस्तांतरण के लिए बीमा, जोखिम मूल्यांकन करना, और आपदा तैयारी के लिए बजट का प्रावधान करना।

इन उपायों का उद्देश्य आपदा के जोखिम को कम करना, जान-माल की रक्षा करना और समाज को आपदाओं के प्रति अधिक लचीला (Resilient) बनाना है।

9. क्षति आकलन के विभिन्न आयामों का उल्लेख कीजिए ।

उत्तर : क्षति आकलन आपदा प्रबंधन, बीमा और कानूनी संदर्भों में आपदा-पूर्व और पश्चात प्रभाव को मापने की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। इसके मुख्य आयामों में भौतिक क्षति (बुनियादी ढांचा), आर्थिक नुकसान (व्यर्थ संपत्ति), सामाजिक प्रभाव (मानव विस्थापन), और पर्यावरणीय क्षति (पारिस्थितिक तंत्र को नुकसान) शामिल हैं।

क्षति आकलन के विभिन्न प्रमुख आयाम इस प्रकार हैं:

- **भौतिक क्षति का आकलन (Physical Damage):** इसमें घरों, सड़कों, पुलों, अस्पतालों और सरकारी इमारतों जैसे बुनियादी ढांचे के विनाश या संरचनात्मक क्षति (जैसे- मामूली, अत्यधिक, या नष्ट) को मापा जाता है।
- **आर्थिक और वित्तीय नुकसान (Economic Loss):** यह व्यवसायों, कृषि, उत्पादन क्षमता और व्यक्तिगत संपत्ति के मौद्रिक नुकसान का मूल्यांकन है, जो पुनर्प्राप्ति के लिए आवश्यक बीमा और मुआवजे के निर्धारण में मदद करता है।
- **सामाजिक और मानवीय आयाम (Social Impact):** इसमें आबादी पर पड़ने वाले प्रभाव, जैसे कि विस्थापन, चोट, मौत, और आवश्यक सेवाओं (पानी, बिजली, स्वास्थ्य) के व्यवधान का आकलन किया जाता है।
- **पर्यावरणीय और पारिस्थितिक क्षति (Environmental Damage):** प्राकृतिक आपदाओं या औद्योगिक दुर्घटनाओं के कारण वनों की कटाई, वन्यजीवों के आवास के नुकसान, और प्रदूषण जैसे पारिस्थितिक तंत्र को पहुंचे नुकसान का मूल्यांकन करना।

- **कार्यात्मक क्षति का आकलन (Functional Assessment):** यह जांचना कि भौतिक संपत्ति मौजूद तो है, लेकिन क्या वह अपने उद्देश्य के लिए काम कर रही है (उदा. बिल्डिंग खड़ी है पर रहने योग्य नहीं है)।

10. पुनर्वास को परिभाषित कीजिए और उसके प्रकारों को खोजिए।

उत्तर : पुनर्वास (Rehabilitation) किसी बीमारी, चोट, विकलांगता या व्यसन के बाद व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और व्यावसायिक कार्यक्षमता को बहाल करने या सुधारने की एक व्यवस्थित प्रक्रिया है। यह उपचार, चिकित्सा और सहायता के माध्यम से व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाकर सामान्य जीवन में वापस लाने का एक व्यापक प्रयास है।

पुनर्वास के मुख्य प्रकार निम्नलिखित हैं:

- **शारीरिक पुनर्वास (Physical Rehab):** भौतिक चिकित्सा (physiotherapy) और व्यायाम के माध्यम से चोट या स्ट्रोक के बाद शरीर की गतिशीलता और ताकत को वापस पाना।
- **व्यावसायिक पुनर्वास (Vocational Rehab):** विकलांग या घायल व्यक्तियों को कार्यबल में पुनः प्रवेश करने के लिए कौशल प्रशिक्षण और सहयोग प्रदान करना।
- **नशामुक्ति पुनर्वास (Addiction Rehab):** नशीली दवाओं, शराब या लत से ग्रसित व्यक्तियों को मनोवैज्ञानिक परामर्श और उपचार के माध्यम से लत से मुक्त करना।
- **मानसिक/संज्ञानात्मक पुनर्वास (Cognitive Rehab):** मानसिक बीमारियों या चोट के बाद मानसिक क्षमताओं और भावनात्मक स्वास्थ्य को सुधारने की प्रक्रिया।

IGNOU IQ Hindi

ZOOM CLASS

All courses are available

PACKAGE DETAILS

- Free Study Materials
- Practice sets (HardCopy)
- Revision before Exams
- Monday to Friday Classes

JOIN NOW

CONTACT US
6205717642/8521027286

www.ignouiqhindi.Com

GUESS PAPER

5 Years Previous Questions Answers

GUESS PAPER

BPSC - 103

Disclaimer for this Guess Paper/Notes/Sample Papers By IGNOU IQ HINDI (IIH)

This PDF contains previous year questions asked by IGNOU. This PDF has been created to help you in the exam. However, It is important to note the following :

A. No Guarantee of Examination Questions: We do not guarantee that the questions presented in this sample paper will appear in your actual exams. The content is for practice purposes only.

B. Book Study Recommended: To achieve good marks in your IGNOU exams, it is highly recommended that you thoroughly study the prescribed course materials and textbooks. Relying solely on this sample paper may not be sufficient for exam success.

C. Use as a Study Materials : Use this sample paper as a supplementary study aid to test your knowledge and exam preparedness.

D. Self-Responsibility: Your performance in exams is your responsibility, and success depends on your dedication to studying the course material.

हमारे यहाँ IGNOU के सभी COURSES के Study Materials जैसे ; Guess Paper/Book Notes/ Practice Sets बहुत ही सरल भाषा में उपलब्ध है.

Our Website
Www.ignouiqhindi.Com

Phone Number
6205717642/8521027286